स्नातक–हिन्दी–प्रतिष्ठा खण्ड – तीन

प्रसाद के नाटकों की विशेषताएँ

– डॉ. मुन्ना साह

जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी नाट्य साहित्य में एक नवीन प्रवृत्ति 'रोमैंटिक दृष्टिकोण' का समावेश किया। प्रसाद के **रोमैंटिक दृष्टिकोण** ने सांस्कृतिक विरासत को नई अर्थवता में अभिव्यक्त किया। "मौर्यकालीन कथानक में उनका अपना युग बोलता है, गुप्त कालीन कथानक में उनके समय की प्रतिछवियाँ देखी जा सकती हैं। इन प्रतिछवियों में भारतीय संस्कृति का गत्यात्मक और आदर्शात्मक स्वरूप अंकित हुआ– गत्यात्मक इसलिए कि वह युग से बद्ध है, आदर्शात्मक इसलिए कि रोमैंटिक आदर्शवादी होता है।"[1](हिन्दी नाटक, पृ.50)

रोमैंटिक आंदोलन की प्रमुख विशेषताएँ – वैयक्तिकता, आवेगमयता, जीवन के प्रति उल्लास, साहस आदि हैं। प्रसाद के नाटकों में इन सारी विशेषताओं को देखा जा सकता है।

'चन्द्रगुप्त' नाटक आवेगमयता से भरा पड़ा है। वस्तुतः प्रसाद के नाटकों को समझने के लिए उनकी रोमैंटिक रुझान को ध्यान में रखना आवश्यक है।

चरित्र चित्रण – प्रसाद अपने नाट्य पात्रों को अधिक से अधिक सहानुभूति प्रदान करते हैं। पात्रों के संघर्षों को मार्मिक ढंग से चित्रित करते हैं। वे पात्रों की भावुकता को कुशलतापूर्वक दर्शाते नजर आते हैं। प्रसाद के नाटकीय पात्रों की विशेषताओं के आधार पर निम्न श्रेणीयों में बांट सकते हैं– 1. महत्वकांक्षी पात्र, 2. राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता के लिए सबकुछ त्यागने वाले पात्र, 3. कूटनीतिज्ञ पात्र, 4. महात्मा और ऋषि पात्र, 5. भारतीय नारीत्व का प्रतिनिधित्व करने वाली पात्र इत्यादि।

कथोपकथन – प्रसाद के नाटकों में कथोपकथन का भी महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कृत नाटकों की भांति प्रसाद के नाट्य पात्र संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं का प्रयोग करते देखे जाते हैं। सामान्य जीवन की व्यवहार कुशलता के प्रतिकूल जब साहित्यिक वैशिष्ट्य का समावेश कर दिया जाए वहाँ नाटक के कथोपकथन अस्वभाविक होते हैं। अस्वभाविकता को स्वभाविक बनाने के लिए संवादों में संवेगात्मकता का पुट आवश्यक है। परिस्थितियों की विभिन्नता और मानसिक सिथितियों की विविधता कथोपकथन की शैली को अनेक रूप–रंग देती है।

———————————— • • • ————————————